ओम् शान्ति 27-7-10 मधुबन

''बड़े भाईयों की भटठी में प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश''

– – गुल्जार दादी

आज सदा के सदृश्य बापदादा के पास वतन में पहुंची, तो सामने से ही नयनों के स्नेह और शक्ति सम्पन्न दृष्टि पाते हुए सामने पहुंच गई और बांहों के अमूल्य हार में लवलीन हो गई। सच तो यह मिलन इतना प्यारा है जो आप भी अवश्य लवलीन बनने का अनुभव करते ही होंगे। कुछ समय बाद बाबा बोले, आज क्या समाचार लाई हो ? मैं बोली बाबा आज तो आपके सर्व स्थान से आये हुए निमित्त पाण्डवों की यादप्यार लाई हूँ। बाबा बोले, पाण्डव सेना का गायन है विजयी पाण्डव। अक्षोणी सेना को जीतने वाले पाण्डव। तो ऐसे पाण्डव सेना को देख बापदादा खुश हैं और सदा हर बच्चे को ``बाप की आशाओं के दीपक हैं'', इस नज़र से देखते हैं क्योंकि हर बच्चा बापदादा के साथी हैं। अब बापदादा सिर्फ यही कहता है कि जैसे सेवा के साथी बने हो वैसे सिर्फ यह ध्यान रखना कि साथी के साथ स्वयं को भी साक्षी दृष्टा बनाए, सम्बन्ध में आते बाप समान साक्षी स्थिति में भी सदा रहना है। आप घर में वा सेन्टर में नहीं रहते हो लेकिन सारे विश्व की स्टेज का हीरो एक्टर हो इसलिए सबकी नज़र आपके ऊपर है क्योंकि आप ज़ीरो के साथी हो।

ऐसे कहते बाबा बोले, बाप को भी यह भट्ठियां बहुत अच्छी लगती हैं क्योंकि सबके ऊपर ``सम्पन्न और समान बनने का'' छाप लग रहा है। ऐसे कहते ही बाबा के नयनों में सब भट्ठी के बच्चे समा गये। फिर बाबा बोले आज इन पाण्डवों को भी वतन का सैर कराते हैं। बस बाबा का संकल्प और सब वतन में पहुंच गये। आज वतन में बाबा ने सबके लिए डबल वी (V) के रूप में बैठने के चबूतरे बनवाये थे। बापदादा सामने थे और सब वी सेफ में बैठे हुए थे। यह भी दृष्य बहुत अच्छा लग रहा था। उस वी के आगे 3 चबूतरे और भी लगे हुए थे जिसमें तीनों भाई आगे आगे बैठे थे और सभी विशेष स्नेह में समाये हुए थे। बापदादा हर बच्चे को बहुत स्नेह, स्वमान भरी दृष्टि दे रहे थे और बोले, हर बच्चा बाप के लाडले दिल के दुलारे हैं। उसके बाद बाबा बोले, बच्ची अब इन बच्चों को भी सैर करायेंगे ना। तो सब बहुत खुश हो रहे थे। फिर तो बापदादा आगे आगे चले और सब पीछे पीछे चल पड़े। तो बाबा हम सबको एक पहाड़ी पर ले चले, तो पहाड़ी के नीचे से बहुत लोगों की आवाज आ रही थी कि सुख दो, शान्ति दो, मेहर करो, क्षमा करो, हमारे पूर्वज कहाँ हो, हमारे पूज्य कहाँ हो .... ऐसी आवाजें सुनाई दे रही थी। तो बाबा बोले, अब इन्हों को सकाश दो। जैसे साकार में सेवा के निमित्त हो वैसे इस सेवा में भी अभ्यास कर निमित्त बनो। तो सब इनट्रेस्ट से सकाश देने की प्रैक्टिस करने लगे। ड्रामा अनुसार हमारी भट्ठी में भी यही बात चल रही थी। उसके बाद बाबा हम सबको पहाड़ी का चक्र लगाते नीचे ले आये और फिर उसी चबूतरों में सब बैठ गये। बाबा भी बैठे थे, सब दृष्टि का आनंद ले रहे थे। दृष्टि का आनंद लेने के बाद बाबा बोले, बच्ची अब जब बाबा को अपनी कमजोरियां लिख दी हैं तो सिर्फ लिख दी हैं या बाबा को देकर समाप्त कर दी ? दी हुई वस्तु वापस ली नहीं जाती। सब बच्चे सयाने समझदार हैं, मददगार हैं इसलिए निमित्त हैं तो देना अर्थात् समाप्ति।

उसके बाद बाबा बोले बच्ची, इन विशेष बच्चों को क्या सौगात देंगी ? मैं मुस्कराई तो क्या देखा! बाबा का संकल्प करना और सौगातें पहुंच गई। सौगात क्या थी! तो देखा कंगन थे, जिसमें बीच में शिवबाबा सच्चे डायमण्ड से चमक रहा था और दोनों तरफ लिखत थी -`` बाप समान सम्पन्न भव! बाप समान सम्पूर्ण भव''। यह लिखत भी बहुत चमक रही थी। बाबा ने सबको अपने हाथ से पहनाया। सब बड़ी खुशी में अतीन्द्रिय सुख में झूम रहे थे। फिर बाबा ने सबको सर्किल में खड़ा किया और दृष्टि देते अति स्नेह का हाथ हिलाते सबको साकार वतन में भेज दिया। अच्छा। ओम् शान्ति।